

## ग्रीष्म-ऋतु

### अथवा

### गर्मी का मौसम

वसन्त का बस अन्त हुआ | धूप तेज होने लगी | प्रातःकाल जहाँ शीतल वायु चलती थी, वहाँ अब गरम हवा चलने लगी | या फिर हवा बिलकुल बन्द रहने लगी | ग्रीष्म-ऋतु आरम्भ हो गई | यह ज्येष्ठ-आषाढ महीनों में होती है | कई जगह बैसाख से ज्येष्ठ के अन्त तक गर्मी पड़ती है |

दोपहर को भयंकर गर्मी पड़ती है | लगता है- सूर्य आग बरसा रहा है | धरती तवे-सी जल रही है, सनसन लूँ चल रही हैं | लोगों के शरीर से पसीना ढल रहा है | सड़क पर निकलना कठिन हो गया है | जहाँ कोई छायादार पेड़ आ जाता है, उसके नीचे थोड़ी देर विश्राम करके लोग आगे चल पड़ते हैं |

स्नान से, जल पीने से, ठंडी बोतल पीने से, शिकंजी या बर्फ के पानी से चैन पड़ती है | प्रातः-सायं स्नान करने से शरीर शीतल होता है | रात को ठंडी हवा चले तो नींद आ जाती है | यदि हवा बन्द हो तो नींद भी नहीं आती |

चिलबिलाती धूप में आँखों चौंधिया जाती हैं | पशु-पक्षी भी व्याकुल हो जाते हैं | वे भी छायादार पेड़ का सहारा लेकर चैन पाते हैं | कुछ लोग छाता लेकर आते-जाते हैं | छाते से कुछ-न-कुछ बचाव तो गर्मी से हो ही जाता है | बहुत से लोग हरी ऐनक पहनते हैं | सब कहते हैं कि ग्रीष्म-ऋतु बुरी है |

परन्तु गर्मी से ही खेतों में फसलें पकती हैं | बागों में फल पकते हैं | यदि गर्मी न पड़े, तो फलों में मिठास नहीं पड़ती, शरीर से पसीना नहीं निकलता, समुद्र से भाप न उठे तो बादल न बनें | बादल न बनें तो वर्षा कैसे हो ? इसलिए ग्रीष्म-ऋतु का अपना महत्त्व है |

1- Metindeki cümlelerin yapısı incelenerek, çevirisi yapılacaktır.